Dr.Raman Kumar Thakur

Asstt. Prof.(Guest)Deptt. of Economics, D.B.College, Jaynagar.

Class:- B.A.part-1(Hons).Date:-06-08-2020.Lecture n.-05.

Topic:- "अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का अवसर लागत सिद्धांत "

:- प्रो. हैबरलर ने अंतरराष्ट्रीय व्यापार अवसर लागत सिद्धांत का प्रतिपादन श्रम लागत के स्थान पर अवसर लागत(Opportunity Cost) के आधार पर किया है। अवसर लागत से तात्पर्य एक वस्तु की दूसरी वस्तु से प्रतिस्थापित करने की लागत से है। और इसे 'त्यागे हुए विकल्प'(Alternative foregone)के रूप में व्यक्त किया जाता है।

यदि स्थिर लागतो के अंतर्गत उत्पादन की स्थिति की कल्पना की जाए तो दो वस्तुओं A व B का प्रतिस्थापन अनुपात एक समान ही रहेगा अर्थात A के उत्पादन में वृद्धि करने के लिए B को समान मात्रा में ही त्याग करना पड़ेगा। सामान लागत की स्थिति में प्रतिस्थापन दर एक बराबर रहेगी मान लीजिए A वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने के लिए B वस्तु की 2 इकाइयां कम करनी पड़ती है तो

A और B के मध्य प्रतिस्थापन दर 1:2 है। इन वस्तुओं की कीमत अथवा विनिमय अनुपात भी यही होगा यदि इन वस्तुओं का उत्पादन बढ़ती हुई लातों के अंतर्गत किया जाता है तो प्रतिस्थापन वक्र मूल बिंदु के उ'तोदर(Concave to the Origin) होगा। ऐसी स्थिति में A की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने के लिए B की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई मात्रा का त्याग करना पड़ेगा। A की B रूप में अवसर लागत बढ़ती जाएगी। यदि दोनों वस्तुओ का उत्पादन घटती लागतो के अधीन होता है तो प्रतिस्थापित वक्र मूल बिंदु से उत्तरोत्तर होगा। जैसे-जैसे B के स्थान पर A का उत्पादन प्रतिस्थापित किया जाएगा, A की अवसर लागत B के रूप में घटती जाएगी । इसी प्रकार A के स्थान पर B का अतिरिक्त उत्पादन करने पर B की अवसर लागत A के रूप में घटती जाएगी।

स्थिर लागत के अंतर्गत दो राष्ट्रों में दो वस्तुओं का विनिमय अनुपात अवसर लागत द्वारा निर्धारित होता है क्योंकि वस्तुओं के उत्पादन की सापेक्षिक लागत तथा कीमत स्थिर रहती है ऐसी स्थिति में दो राष्ट्रों के बीच विशिष्टीकरण और व्यापार का आधार अवसर लागत का अंतर होगा।

एक राष्ट्र उस वस्तु के उत्पादन में पूर्ण विशिष्टकरण करेगा जिसमें उसकी अवसर लागत कम है दूसरा राष्ट्र भी कम

अवसर लागत वाली वस्तु के उत्पादन में पूर्ण विशिष्टकरण करेगा। जो राष्ट्र जिस वस्तु के उत्पादन में अपने समस्त साधन लगाएगा उस राष्ट्र द्वारा उसी वस्तु का निर्यात किया जाएगा। यदि राष्ट्रों में घटती हुई लागत के अंतर्गत उत्पादन हो रहा है तो यह राष्ट्र किसी एक वस्तु के उत्पादन में विशिष्टकरण कर सकता है अथवा दोनों वस्तुओं का उत्पादन कर अपूर्ण विशिष्टकरण कर सकता है। अंतरराष्ट्रीय कीमत द्वारा निर्धारित होगा कि वह किस स्थिति को चुनता है। यदि आरंभ में A वस्तु के मूल्य में वृद्धि होती है तो इसी वस्तु का उत्पादन बढ़ाया जाएगा। उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ उत्पादन लागत में कमी होगी तथा लाभ में वृद्धि होगी।